सिकतासेतुः।

अवबोधनम्।

अ. श्लोके पर्यायवाचिशब्दं चित्वा लिखत।

*१.	बाल्यम्, बाल्यावस्था, शिशुत्वम्, शिशुकाल:	=	**शैशवम्।**
*२.	जनपद:, नगरम्, पुरी, निगम:, पुरम्	=	**प्रतिष्ठानम्।**
३.	ब्राह्मण:, क्षिप्र:	=	**द्विज:।**
४.	जनक:, जन्मदाता, तात:	=	**पिता।**
५.	ज्ञानम्, बोध:	=	**विद्या।**

ब. श्लोके विलोमपदं चिनुत।

१.	अविद्या	×	**विद्या।**
२.	वृद्धत्वम्, वार्धक्यम्, वार्धकम्, जरा, वृद्धकाल:, स्थाविरम्	×	**शैशवम्।**

क. सन्धिविग्रहं कुरुत।

*१. क्लेश्यमानोऽपि = **क्लेश्यमान: + अपि।**

*२. नाध्यैत = **न + अध्यैत।**

ड. सन्धिं कुरुत।

१. क: + अपि = **कोऽपि।**

इ. चतुर्थपदं लिखत।

१. कोऽपि : क: + अपि : : क्लेश्यमानोऽपि : ________

उत्तर: कोऽपि : क: + अपि : : क्लेश्यमानोऽपि :
क्लेश्यमान :+ अपि

अवबोधनम्।

अ. **श्लोके समानार्थपदं चिनुत।**

*१.	मन्दाकिनी, जाह्नवी, त्रिपथगा	= **गङ्गा।**
२.	पश्चात्, परस्तात्, तदनु, परम्	= **अनन्तरम्।**
३.	निन्द्यमानः	= **गर्ह्यमाणः।**
४.	दुःखम्, पीडा	= **अनुशयः।**
५.	दुःखितः, विषण्णः, पीडितः	= **अनुशयान्वितः।**
६.	जगाम	= **ययौ।**
७	तपश्चर्या, तपस्या	= **तपः।**

ब. **श्लोके विलोमशब्दं चिनुत।**

१.	प्राक्, पूर्वम्	× **अनन्तरम्।**
२.	स्तूयमानः	× **गर्ह्यमाणः।**
३.	आनन्दितः, सन्तुष्टः	× **अनुशयान्वितः।**
४.	आययौ, आजगाम	× **ययौ।**

क. **सन्धिविग्रहं कुरुत।**

*१. सर्वैरनुशयान्वितः = **सर्वैः + अनुशयान्वितः।**

२. तपो गङ्गातटम् = **तपः + गङ्गातटम्।**

ड. **धातुसाधित-अव्ययानां चयनम्।**

१. **श्लोके आगतं हेत्वर्थक-धातुसाधित-अव्ययं चित्वा लिखत।**

उत्तरः तप्तुम्।

अवबोधनम्।

अ. श्लोके पर्यायवाचिशब्दं चिनुत।

*१. चकित:, आश्चर्यचकित: = **विस्मित:।**
*२. इन्द्र:, सुरपति:, स्वर्गपति:, पुरन्दर: = **शक्र:।**
३. दृष्ट्वा, अवलोक्य, विलोक्य (पाहून) = **वीक्ष्य।**
४. ब्राह्मण:, विप्र:, क्षिप्र: = **द्विज:।**
५. द्विजाकृति:, द्विजरूपधृक् (ब्राह्मणाचे रूप घेतलेला) = **द्विजच्छद्मा।**
६. समीपम्, समीपे, निकषा (जवळ) = **निकटम्।**
७. आजगाम (आला) = **आययौ।**

ब. श्लोके विपरितार्थकशब्दं चिनुत।

१. दूरे × **निकटम्।**
२. ययौ × **आययौ।**

क. सन्धिविग्रहं कुरुत।

*१. निकटमाययौ = **निकटम् + आययौ।**
२. तत्राश्रितोग्रतपसस्तस्य = **तत्र + आश्रितोग्रतपस: + तस्य।**

ड. सन्धिं कुरुत।

१. शक्र: + निकटम् + आययौ = **शक्रो निकटमाययौ।**

इ. जालरेखाचित्रं पूरयत।

१. शक्रस्य कृते प्रयुक्तानि विशेषणानि श्लोके चित्वा लिखित।

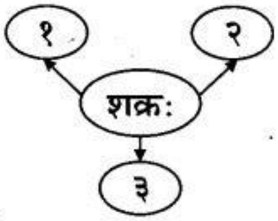

उत्तर: १. **विस्मित:।** २. **वारयिष्यन्।**
३. **द्विजच्छद्मा।**

अवबोधनम्।

अ. श्लोके पर्यायवाचिशब्दं चिनुत।

*१. वालुका, सूक्ष्मा, पानीयचूर्णिका (वाळू) = **सिकता।**

२. तीरः, पुलिनः = **तटः।**

३. जलम्, तोयम्, नीरम्, पयः = **वारि।**

४. भङ्गः, तरङ्गः, वीचिः (लाट) = **ऊर्मिः।**

ब. श्लोके विलोमपदं चिनुत।

१. गत्वा, यात्वा (जाऊन) × **आगत्य।** (येऊन)

क. सन्धिविग्रहं कुरुत।

*१. गङ्गायास्तटाच्चिक्षेप = **गङ्गायाः + तटात् + चिक्षेप।**

२. उद्धृत्योद्धृत्य = **उद्धृत्य + उद्धृत्य।**

ड. सन्धिं कुरुत।

१. पश्यतः + तस्य = **पश्यतस्तस्य।**

इ. विशेषण-विशेष्य-अन्वितिः।

१. 'वारिणि' इति पदस्य कृते श्लोके प्रयुक्तं विशेषणं चित्वा लिखत।

उत्तरः **सोर्मिणि।**

अवबोधनम्।

अ. **श्लोके आगतं पर्यायवाचिशब्दं चित्वा लिखत।**

१. विलोक्य, अवलोक्य, वीक्ष्य (पाहून) = **दृष्ट्वा।**

२. अविश्रान्तः, अक्लिष्टः, अतनद्रः (न थकलेला) = **अश्रान्तः।**

३. सकुतूहलम्, सकुतुकम् = **सकौतुकम्।**

ब. **श्लोके आगतं विलोमशब्दं लिखत।**

१. बद्धमौनः × **मुक्तमौनः।**

२. श्रान्त (थकलेला) × **अश्रान्तः।** (न थकलेला)

क. **सन्धिविग्रहं कुरुत।**

१. मुक्तमौनस्तम् = **मुक्तमौनः + तम्।**

२. ब्रह्मन्करोषीति = **ब्रह्मन् + करोषि + इति।**

ड. **सन्धिं कुरुत।**

१. किम् + इदम् = **किमिदम्।**

अवबोधनम्।

अ. **श्लोके समानार्थकपदं चित्वा लिखत।**

१. विप्राकृतिः, ब्राह्मणाकृतिः (ब्राह्मणवेषधारी) = **द्विजाकृतिः।**

२. अब्रवीत्, अभाषत (म्हणाला) = **अवादीत्।**

३. वेणी, पालिः, पिण्डलः, वरणः (पूल) = **सेतुः।**

४. पशुः, सजीवः, देही = **प्राणी।**

ब. **श्लोके आगतं विलोमशब्दं लिखत।**

१. नाशाय × **ताराय।**

क. सन्धिविच्छेदं कुरुत।

१. स च = **सः+ च।**
२. प्राणिनामिति = **प्राणिनाम् + इति।**

ड. सन्धिं कुरुत।

१. शक्रः + अवादीत् = **शक्रोऽवादीत्।**

इ. विशेषण-विशेष्य-अन्वितिः।

१. शक्रस्य कृते प्रयुक्ते द्वे विशेषणे लिखत।

(१.) — (**शक्रः**) — (२.)

उत्तरः १. निर्बन्धपृष्टः। २. द्विजाकृतिः।

अवबोधनम्।

अ. श्लोके समानार्थकपदं चिनुत।

१. अवदत्, अभाषत, अगदत् (म्हणाला) = **अब्रवीत्।**
२. मूढ, अज्ञ, बालिश (हे मूर्खा) = **मूर्ख।**

ब. श्लोके आगतं विलोमपदं लिखत।

१. पण्डित, बुद्धिमान् × **मूर्ख।**
२. सततम्, निरन्तरम्, सदैव × **कदाचन।**

क. सान्धिविग्रहं कुरुत।

१. गङ्गायामोघहार्याभिः = **गङ्गायाम् + ओघहार्याभिः।**
२. ततोऽब्रवीत् = **ततः + अब्रवीत्।**

ड. विशेषण-विशेष्य-अन्वितिः।

१. श्लोके आगतं विशेषण-विशेष्ययुगुलं चिनुत।

उत्तरः ओघहार्याभिः सिकताभिः।

अवबोधनम्।

अ. श्लोके पर्यायवाचिपदं चिनुत।

*१. शृङ्गम् = **विषाणम्।**

२. आकर्ण्य, निशम्य = **श्रुत्वा।**

३. जानासि = **वेत्सि।**

४. शशकः, प्लुतगतिः, लोमकर्णः, वनाखुः = **शशः।**

५. गगनम्, आकाशम्, अन्तरिक्षम्, नभः = **व्योम।**

ब. श्लोके विपरितार्थकपदं चित्वा लिखत।

१. अनिच्छा × **इच्छा।**

क. सन्धिविग्रहं कुरुत।

*१. यद्येवम् = **यदि + एवम्।**

*२. तमुवाचैवम् = **तम् + उवाच + एवम्।**

*३. व्रतोपवासादिभिस्त्वम् = **व्रतोपवासादिभिः + त्वम्।**

४. साधयितुमुद्यतः = **साधयितुम् + उद्यतः।**

ड. सन्धिं कुरुत।

१. तत् + श्रुत्वा = **तच्छ्रुत्वा।**

२. शक्रः + अथ = **शक्रोऽथ।**

इ. चतुर्थपदं लिखत।

i. तमुवाचः : तम् + उवाच :: साधयितुमुद्यत : ______

उत्तरः तमुवाचः : तम् + उवाच :: साधयितुमुंद्यत :
साधयितुम् + उद्यतः

ii. विना पाठम् : विना पाठेन :: विना श्रुतम् : ______

उत्तरः विना पाठम् : विना पाठेन :: विना श्रुतम् : **विना श्रुतेन**

iii. विना पाठम् : विना पाठात् : : विना श्रुतम् : ______

उत्तर: विना पाठम् : विना पाठात् : : विना श्रुतम् : **विना श्रुतात्**

अवबोधनम् ।

अ. श्लोके समानार्थकपदं चिनुत।

१. अभ्यास: = **अध्ययनम्।**

२. शिक्षेत (शिकावे) = **अधीयीत।**

ब. श्लोके विपरितार्थकपदं चिनुत।

१. साक्षर: × **अनक्षर:।**

क. सन्धिविग्रहं कुरुत।

*१. भवेदेतन्न = **भवेत् + एतत् + न।**

*२. ह्यधीयीत = **हि + अधीयीत।**

३. कश्चन = **क: + चन।**

ड. सन्धिं कुरुत।

१. विद्या + अध्ययनम् = **विद्याध्ययनम्।**

इ. जालरेखाचित्रं पूरयत।

१. 'अध्ययन' इति शब्दस्य अपरे विभक्ती प्रयुज्य जालरेखाचित्रं पूरयत।

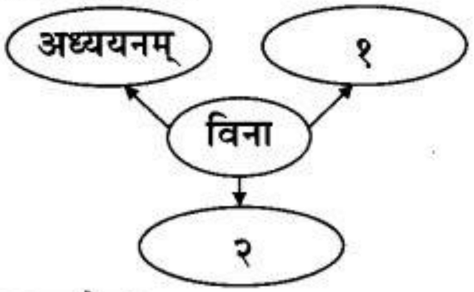

उत्तर: १. **अध्ययनेन।**

२. **अध्ययनात्।**

अवबोधनम्।

अ. श्लोके आगतं समानार्थकपदं लिखत।

१. तपश्चर्या, तापना, तपस्या = **तपः।**

२. निकेतनम्, गेहम्, वेश्म = **गृहम्।**

ब. श्लोके आगतं विलोमशब्दं लिखत।

१. अविचार्य (विचार न करता) × **विचार्य।** (विचार करून)

२. स्वीकृत्य, गृहीत्वा (स्वीकारून) × **त्यक्त्वा।** (सोडून)

क. सन्धिविच्छेदं कुरुत।

*१. इत्युक्तः = **इति + उक्तः।**

ड. सन्धिं कुरुत।

*१. तपः + त्यक्त्वा = **तपस्त्यक्त्वा।**

इ. सूचनानुसारं लिखत।

१. श्लोके आगते पूर्वकालवाचके लिखत।

उत्तरः विचार्य, त्यक्त्वा।

२. श्लोके आगतं हेत्वर्थकाव्ययं चित्वा लिखत।

उत्तरः प्राप्तुम्।

सूचनानुसारं वाक्यपरिवर्तनं कुरुत।

*१. स गङ्गातटं ययौ । (परोक्षभूतकालस्य स्थाने प्रथमभूतकालम् उपयोजयत।)

उत्तर: **स गङ्गातटम् अयात्।**

स्पष्टीकरण – ययौ = या (२ परस्मैपदम्)
अभ्यस्त-परोक्ष-भूतकाल:,
तृतीयपुरुष: एकवचनम्।
या (२ प. प.) प्रथमभूतकाल:, तृतीयपुरुष: एकवचनम् = अयात्

*२. तं वीक्ष्य शक्र: निकटमागच्छत्। (पूर्वकालवाचकं निष्कासयत।)

उत्तर: **शक्र: तं व्यैक्षत निकटमागच्छत् च।**

स्पष्टीकरण – वाक्यातील पूर्वकालवाचक ओळखा - वीक्ष्य – वि + ईक्ष् (१आ.प.)
मुख्य क्रियापद 'आगच्छत्' प्रथम भूतकाल:, तृतीयपुरुष: एकवचनम्.
∴ वि + ईक्ष् (१आ.प.) प्रथमभूतकाल:, तृतीयपुरुष: एकवचनम् = व्यैक्षत
वाक्याच्या शेवटी 'च' हे अव्यय योजा.
कर्तृवाचक पद वाक्याच्या आरंभी योजा.

*३. आसीत् कोऽपि द्विज:। (बहुवचने लिखत।)

उत्तर: **आसन् केऽपि द्विजा:।**

स्पष्टीकरण –

आसीत् कोऽपि द्विज:। (कर्ता व क्रियापद-तृतीयपुरुष: एकवचनम्)
↓ ↓ ↓
आसन् केऽपि द्विजा:। (कर्ता व क्रियापद-तृतीयपुरुष: एकवचनम्)

(क: अपि द्विज: – कोऽपि हे 'द्विज:' चे अनिश्चयवाचक सर्वनाम होय.)

४. स: सिकता: चिक्षेप। (प्रथमभूतकालं प्रयोजयत।)

उत्तर: **स: सिकता: अक्षिपत्।**

स्पष्टीकरण – चिक्षेप = क्षिप् (६ उभयपदम्, येथे परस्मैपदम्)
अभ्यस्त-परोक्ष-भूतकाल:
तृतीयपुरुष: एकवचनम्
क्षिप् (६ प.प.) प्रथमभूतकाल:, तृतीयपुरुष: एकवचनम् = अक्षिपत्

५. शक्र: निकटम् आययौ। (प्रथमभूतकालं प्रयोजयत।)

उत्तर: **शक्र: निकटम् आयात्।**

स्पष्टीकरण – आययौ – आ + या (२ प.प.)
अभ्यस्त-परोक्ष-भूतकाल:,
तृतीयपुरुष: एकवचनम्
आ + या (२ प.प.) प्रथमभूतकाल:, तृतीयपुरुष: एकवचनम् = आयात्

६. द्विजरूपधृक् तम् उवाच। (प्रथमभूतकालं प्रयोजयत।)

उत्तर: द्विजरूपधृक् तम् अब्रवीत्।

स्पष्टीकरण – उवाच = ब्रू (२ उ.प., येथे प.प.)
अभ्यस्त-परोक्ष-भूतकाल:,
तृतीयपुरुष: एकवचनम्।
ब्रू (२ प.प.) प्रथमभूतकाल:, तृतीयपुरुष: एकवचनम् = अब्रवीत्।

७. द्विजरूपधृक् तम् उवाच। (बहुवचने लिखत।)

उत्तर: द्विजरूपधृज: तम् **ऊचु:।**

स्पष्टीकरण – द्विजरूपधृक् तम् उवाच।
↓ ↓ ↓
द्विजरूपधृज: तम् ऊचु:।
द्विजरूपधृज् - 'ज्' कारान्त प्रथमा बहुवचन = द्विजरूपधृज:
उवाच ऊचतु: ऊचु:। अभ्यस्त-परोक्ष-भूतकाल:, तृतीयपुरुष:
∴ ऊचु: बहुवचनम्.

८. स: तप: त्यक्त्वा गृहं ययौ। (पूर्वकालवाचकं निष्कासयत।)

उत्तर: स: तप: तत्याज गृहं ययौ च।

स्पष्टीकरण – वाक्यातील पूर्वकालवाचक अव्यय ओळखा. (पूर्वकालवाचकम्) त्यक्त्वा - त्यज् (१ प.प.)
मुख्य क्रियापद ययौ – या (२. प.प.) अभ्यस्त-परोक्ष-भूतकाल:, तृतीयपुरुष: एकवचनम्
∴ त्यज् (१ प.प.) अभ्यस्त-परोक्ष-भूतकाल:, तृतीयपुरुष: एकवचनम् = तत्याज
वाक्याच्या शेवटी 'च' योजा.

९. स तपोदत्तः तं पृष्टवान्। (प्रयोगपरिवर्तनं कुरुत।)

उत्तर: तेन तपोदत्तेन सः पृष्टः।

स्पष्टीकरण –

विशेषणम्	कर्ता	कर्म	कर्तरि-भू-धा-वि	=	सकर्मक -कर्तरि-प्रयोग:
१	१	२	१		
सः	तपोदत्तः	तं	पृष्टवान्।		
↓	↓	↓	↓		
तेन	तपोदत्तेन	सः	पृष्टः।		
३	३	१	१		
	कर्ता	कर्म	कर्मणि-भू-धा-वि	=	कर्मणि प्रयोग:

१०. अहं गङ्गायां सेतुं बध्नामि। (प्रयोगं परिवर्तयत।)

उत्तर: मया गङ्गायां सेतुः बध्यते।

स्पष्टीकरण –

कर्ता		कर्म	क्रियापदम्	=	
१		२	१		
अहं	गङ्गायां (बदलत नाही)	सेतुं	बध्नामि।	=	सकर्मक -कर्तरि-प्रयोग:
↓		↓	↓		
मया	गङ्गायां	सेतुः	बध्यते।		
३		१	१		
कर्ता		कर्म	क्रियापदम्	=	कर्मणि - प्रयोग:

कर्मणि प्रयोगासाठी

बन्ध् + य + आत्मनेपद चा वर्तमानकाळी तृतीय पुरुष एकवचन प्रत्यय = बध्यते।